श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में वर्णित समसामयिक स्थितियाँ

रेनू कुमारी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला

समसामयिक स्थिति से अभिप्राय समाज के सभी पक्षों के स्वभाविक चित्रण से है। जिस परिवेश में समाज जीवन यापन करता है, उस काल विशेष की उपलब्धियाँ समसामयिक परिस्थितियाँ कहलाती हैं।

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य के रचयिता श्रीत्रिगुणानन्द शुक्ल ने भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रयासरत उस समय के समाज के प्रत्येक पक्ष को छुआ है। चाहे वह भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अथवा धार्मिक हो। कवि ने प्रत्येक पक्ष का भली–भांति वर्णन करते हुए अपनी रचना को उत्कृष्ट रूप प्रदान किया है। जिससे तत्कालीन परिस्थितियों का सम्यक परिचय प्राप्त होता है।

भौगोलिक स्थिति

हार्ट शोर्न के अनुसार– भूगोल वह विज्ञान है, जो पृथ्वी के स्थानीय परिवर्तनशील स्वरूप का वर्णन और व्याख्या 'मानव संसार' के सन्दर्भ में करता है।[1] श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में वन, वर्षा ऋतु, नदी इत्यादि के द्वारा भौगोलिक स्थिति का वर्णन उपलब्ध होता है।

वन– अनेक प्रकार के वृक्षों से समन्वित स्थान को वन अथवा जंगल कहते हैं।[2]

भौगोलिक स्थिति को प्रदर्शित करने वाले प्रसंग अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं। नेताजी जब वन मार्ग से प्रस्थान कर रहे थे तो प्राकृतिक सौन्दर्य का जो अनुपम वर्णन काव्यकार ने किया है वह इस प्रकार है– कहीं मार्ग कान्टों से भरा था, कहीं जंगल में भालूओं का समूह था, कहीं पृथ्वी वन्य जीवों से परिपूर्ण थी, तो कहीं बाघ–सिंह से युक्त थी। कहीं तो केतकी के फूल माला की तरह फैले थे, तो कहीं पाटली और चम्पा आदि के फूलों से सुशोभित भूमि थी। कहीं वृक्षों पर कोयल कूक रही थी, तो कहीं सारी भूमि चम्पक नामक पुष्प से शोभित थी।[3] इसी तरह कहीं भूमि तालाब आदि से शोभित थी।[4]

वर्षा ऋतु– मौसम अथवा वर्ष के एक भाग को ऋतु कहते हैं। ऋतुएं गिनती में छः हैं– शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हिमऋतु।[5]

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य के द्वादश सर्ग में वर्षा ऋतु का भयंकर वर्णन प्रस्तुत पद्य से प्राप्त होता है। जिसके अनुसार वर्षा ऋतु ने भी अत्यन्त वेग से अपना

अत्यधिक ताण्डव नृत्य प्रारम्भ किया। वायु–सेना की सहायता भी न प्राप्त कर अपनी सेना विरत हो गयी।[6]

नदियाँ – श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में लोगों को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने अनेक नदियों का उल्लेख इस प्रकार किया है– देश के कोने–कोने से पर्वतों की गुफाओं से पुकार हो रही है। गंगा, यमुना, सरस्वती, रेवा प्रभृति हमारी नदियां अपने कलकल शब्दों से हमें पुकार रही हैं।[3] इसी तरह एकादश सर्ग के एक और पद्य से भौगोलिक स्थिति का सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। जिसके अनुसार क्षितिज के उस पार, नदियों और पर्वत–श्रेणियों के भी पार वह धरातल है जहां देवता अपने स्वर्गस्थित निवास को छोड़कर अवतरित हुए।[8]

सामाजिक स्थिति

ज्ञान शब्दकोश के अनुसार मिलना, एकत्र होना, समूह, संघ, दल, सभा, समिति, आधिक्य, समान कार्य करने वालों का समूह अथवा विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघटित संस्था को समाज कहते हैं।[9] और समाज से सम्बन्ध रखने वाला, सहृदय व्यक्ति सामाजिक कहलाता है।[10] अतः हम सब सामाजिक प्राणी हैं।

देशभक्ति– श्रीसुभाषचरितम् देश–भक्ति से पूर्ण महाकाव्य है। अतः समाज में सर्वत्र स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष हो रहा था। जिसका अनुमान प्रस्तुत पद्य से होता है कि राष्ट्रहित के लिए शत्रु सेना की महती पंक्ति को तोड़कर अपनी दशभूमि में प्रवेश करना ही आवश्यक है। हमारे दो ही विकल्प हैं– स्वतन्त्रता प्राप्ति अथवा युद्ध भूमि में प्राणत्याग।[11]

रहन–सहन– उक्त महाकाव्य में लोगों का रहन–सहन सादगी से पूर्ण और उच्च विचारों से सम्पन्न था। प्रतिष्ठित परिवार में पैदा होने के बाद भी नायक सुभाष सादगी से रहते थे। वे सदा एक बार ही भोजन करते थे और केवल दो वस्त्र ही धारण करते हुए पृथ्वी पर ही सोते थे। अपने पिता आदि के द्वारा निन्दा किये जाने पर भी उन्होंने सादा–जीवन ही अपनाया।[12] लोग खाने में साग–सब्जी[13] का प्रयोग करते थे। इसके अतिरिक्त मांसाहारी भोजन खाने वाले भी थे। जैसा कि स्पष्ट है कि हमारे सैनिक एक साथ विनम्रभाव से भोजन करते थे, तथापि कार्यरूप में कुछ पार्थक्य था। मांस खाने वालों का भोजनालय अलग था।[14] इसी तरह स्वतंत्रता प्राप्ति को ही लक्ष्य बनाने वाले लोग मनोरंजन से दूर हो चुके थे, किन्तु चतुर्दश सर्ग के एक पद्य से ज्ञात होता है कि कतिपय लोग शराब का सेवन मनोरंजन के लिए करते थे।[15]

शिक्षा पद्धति – बीसवीं शताब्दी की रचना होने के कारण श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में शिक्षा का स्तर उन्नत हो चुका था। लोग शिक्षा प्राप्ति के लिए

जागरूक थे। नेता सुभाषचन्द्र बोस उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए विदेश भी गए थे, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति को ही अपना लक्ष्य बनाकर उन्होंने उपाधिपत्र को सादर लौटा दिया था।[16]

आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति अर्थात् अर्थ से सम्बन्धित। अर्थ को शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन अर्थात् पैसा कमाना जो जीवन के चार पुरूषार्थों में से एक माना गया है।[17] श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में लेखक ने व्यवसाय, नौकरी, बैंक, वनस्पति, पक्षी, धन इत्यादि के द्वारा आर्थिक स्थिति का उल्लेख किया है।

अर्थ प्राप्ति के लिए रोजगार के रूप में किरानी का कार्य भी किया जाता था। भारत देश की रक्षा के लिए भारतीयों की जो सेना संगठित की गई थी सुप्रसिद्ध बसु वहां किरानी का काम करते थे।[18] इसी तरह सुभाषचन्द्र बोस को उनके पिता ने उच्च शिक्षा ग्रहण कर नौकरी प्राप्त करने के उद्देश्य से विदेश भेजा था, किन्तु उपाधि युक्त होने पर भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए उन्होंने नौकरी न करने का प्रण लिया था।[19] इससे स्पष्ट होता है कि अर्थ प्राप्ति के लिए नौकरी भी एक साधन था। महाकाव्य के द्वादश सर्ग में 'आजाद हिन्द' पत्र को प्रकाशित करने वाले प्रकाशनालय की पुष्टि होती है।[20] अतः स्पष्ट है कि पकाशनालय भी कई लोगों की आजीविका का साधन रहा होगा। इसी तरह महाकाव्य में आकाशवाणी केन्द्रों का भी विकास हो गया था, लोककल्याण के लिए स्वयं नेताजी वार्ता प्रसारित किया करते थे।[21] सम्भवतः बहुत लोग इसमें अपनी सेवाएं देकर लाभ प्राप्त करते होंगें। यह आर्थिक प्रगति का ही परिणाम है कि उक्त महाकाव्य में धनवृद्धि के लिए बैंक का उल्लेख प्राप्त होता है। नेताजी ने तो स्वाधीन देश के लिए स्वाधीन बैंक की नींव रखी थी।[22]

राजनैतिक स्थिति

राज्य की रक्षा और शासन को दृढ़ करने का उपाय बताने वाली नीति को राजनीति कहते हैं।[23]

श्रीसुभाषचरितम् राजनीति प्रधान महाकाव्य है। इसका अनुमान इस बात से हो जाता है कि इसके नायक सुभाषचन्द्र बोस ही नेताजी के नाम से प्रसिद्ध है। उनके नज़र उठाकर देखने से ही कोलाहल करने वाली जनता मौन हो जाती थी।[24]

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा कथित प्रसिद्ध राजनीतिक कथन–

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।' उनका यह आदेश युद्ध के लिए आह्वान था, जिसे सुनते ही लोग तत्पर हो जाते थे।[25]

दिल्ली चलो।[26]

जय हिन्द[27] – हिन्दुस्तान की जयकार करने वाला यह नारा भी नेताजी की देन है। लोग आपस में 'जय हिन्द' कहकर नमस्कार करते थे। जयकार सुनकर अपने सैनिक शान्त और सतर्क हो जाते थे।[27]

स्वराज्य की प्राप्ति अथवा शरीर का त्याग।[28] नेताजी का यह नारा स्वतन्त्रता संग्राम में नई ऊर्जा का संचरण करता था।

सुभाषचन्द्र बोस नेता होने के साथ–साथ एक योग्य सेनापति भी थे। अतः राष्ट्र की विमुक्ति के लिए वे (नेताजी) सर्वप्रथम सेनापति हुए।[29]

आजाद हिन्द फौज– सेनापति के रूप में नेता जी ने सुप्रसिद्ध 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया था। जिसे गांधी, सुभाष आदि नामों से विविध भागों में विभक्त किया था।[30] इसके अतिरिक्त महिलाओं की संख्या सेना में अधिक होने पर उन्हें संयोजित कर 'झांसी की रानी' नामक सेना का संगठन किया था।[31] लोग नेताजी का प्रभावशाली व्याख्यान सुनने के लिए तीलों दूर से पैदल चलकर आते थे। उनकी पुकार सुनकर सबको युद्ध में जाने की प्रेरणा मिलती थी।[32]

धार्मिक स्थिति

धार्मिक स्थिति से अभिप्राय धर्म–संबंधी स्थिति से है।[33] श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों का भी उल्लेख है। जिससे स्पष्ट होता है कि लोग धर्म में आस्था रखते थे।

धर्म में आस्था – एकादश सर्ग में नेताजी के इस प्रकार कहने पर कि देवता अपने स्वर्ग स्थित निवास को छोड़कर अवतरित हुए थे।[34] तथा भगवान राम, कृष्ण ने भारत देश में लोगों के कल्याण के लिए अवतार लिया था,[35] से भी स्पष्ट होता है कि लोग धर्म में पूर्ण श्रद्धा रखते थे। इसी तरह माता लक्ष्मी का उल्लेख भी प्रथम सर्ग में वर्णित है।[36] महाकाव्य के अनेक पद्यों में देवभूमि[37] शब्द का उल्लेख भी यह सूचित करता है कि लोग बहुत धार्मिक थे। नायक सुभाष तो अल्पायु में ही साधुजनों से प्रभावित होकर कुछ समय के लिए तपस्या करने वन चले गये थे।[38]

अन्य धर्म – श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में एक पद्य के अनुसार एक भारतीय मुसलमान जो अत्यन्त सम्पत्तिशाली था, एक दिन नेताजी के पास देशहित के लिए धन–संग्रहार्थ विचार–विमर्श करने के लिए आया।[39] इससे स्पष्ट होता है

कि सर्वधर्म समन्वय का कार्य आधुनिक युग से नहीं अपितु पूर्वकाल से हो रहा है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों, भौगोलिक अथवा सामाजिक, आर्थिक अथवा राजनैतिक या धार्मिक किन्तु उक्त महाकाव्य के लोगों ने प्राथमिकता देशभक्ति को ही दी है। इससे महाकाव्यकार त्रिगुणानन्द शुक्ल की प्रतिभा का भी पता चलता है कि वे अत्यधिक ज्ञानवान और देशभक्त व्यक्ति थे।

सन्दर्भ

1 भौगोलिक विचारधाराएं, पृ. 2
2 हिन्दी विश्वकोश (20), पृ. 561
'वननीति वन–अच् वा वन्यते सेव्यते इति वन घ'।
3 श्रीसुभाषचरितम्, 4/32–33
''क्वचित्कण्टकाकीर्णमार्गः क्वचिच्च समूहो वने भल्लूकानां हि तत्र।
कुतो वन्यजीवैः समाच्छन्नभूता मही व्याघ्रसिंहादिभिः सेवमाना।।
क्वचित्केतकीपुष्पमालासमाना क्वचित्पाटलीचम्पकाकीर्णभूमिः।
क्वचित्कोकिलैः कूजिता वृक्षवर्गाः क्वचिच्चम्पकैः शोभिताभूः समस्ता।।''
4 वही, पृ. 4/34
5 संस्कृत–हिन्दी कोश–पृ. 222–223
6 श्रीसुभाषचरितम्, पृ. 12/37
तताऽपि वर्षर्तुरतीव वेगात् स्वताण्डवं चातिभृशं चकार।
न वायुसैन्यस्य हि प्राप्य सेवां सेना स्वकीया विरता बभूव।।
7 वही, पृ. 11/44
प्रत्येक कोणार्दिरिगह्वरेभ्यः गर्धादित्रिवेणीतटमाध्यमेन।
तथैव रेवायमुनादयो वो नद्यः स्वघोषेण हि चाह्वयन्ति।।
8 वही, पृ. 11/33
9 ज्ञानशब्दकोश, पृ. 817
10 बृहत हिन्दी कोश, पृ. 1483
11 श्रीसुभाषचरितम, पृ. 14/48
पंक्तिं विदार्यैव बृहद्विरूपां स्वदेशभूमौ गमनं ततस्तु।
आवश्यकं राष्ट्रहिताय चैव स्वातन्त्र्यलाभो मरणं रणे वा।।
12 वही, पृ. 1/40
सदैवैकवारं कृतं भोजनन्तु तथा युग्मवस्त्री पृथिव्यां शयानः।
स्वपित्रादिभिः सर्वदा निन्दितोऽपि स साधारणं जीवनं स्वीचकार।।
13 वही, प. 14/8
नीरा कुमारी रणमध्य एव नेतारमागत्य ददौ च शाकम्।
भुक्त्वा च सोऽतीव तुतोष तेन कन्या तु सा ह्यश्रुमुखी बभूव।।
14 वही, पृ. 12/24
स्वराष्ट्रसैन्यस्य च भोजनादिकार्यं सहैवातिविनम्रभावे।
जातं तथापि त्वयमेव भेदो मांसाशिनां स्थानमितः प्रभिन्नम्।।
15 वही, 14/29
मद्यं तु तस्मै रहसि प्रदत्तं मयैव वेतुं सकलं रहस्यम्।
पीत्वा च तेनातिविचारशून्यात् प्रमत्तभावे समुदीरितं तत्।।

16 वही, पृ. 2/25–26
17 ज्ञान–शब्दकोश, पृ. 56
18 श्रीसुभाषचरितम्, पृ. 5/34
स्वजन्मतोऽसौ सफलः स्वकर्मसु युवा यदासीदयमात्मनः कृते।
सुसेवयामास तु सैन्यसेवकान् स तत्र नेता लिपिकमणि स्थितः।।
19 वही, 2/23
पिता तु संश्रुत्य वचो विपद्गतमवाप हृष्टोऽपि प्रयाणवार्तया।
उवाच पुत्रो मम निश्चयो दृढः उपाधियुक्ताय न रोचते भृतिः।।
20 वही, पृ. 12/25–26
21 वही, पृ. 12/20
सिंगापुरे सैन्यदलस्य चासीदाकाशवाणी निजराष्ट्रकस्य।
यतश्च नेता स्वयमेव वार्ता प्रसारयामास हिताय लोके।।
22 वही, पृ. 13/32, 36
23 ज्ञान–शब्दकोश, पृ. 682
24 श्रीसुभाषचरितम्, पृ. 1/6
25 वही, पृ. 1/23
स्वरक्तंददध्वं स्वतन्त्रं करिष्ये स्वदेशाभिमानिभ्य एवं हि वाक्यं।
इदं शासनं त्वस्य चाह्वनरूपं समाश्रुत्य यतत्परास्ते बभूवुः।।
26 वही, पृ. 9/9
'दिल्ली चले' ति'
27 वही, पृ. 10/22
28 वही, पृ. 1/25
29 वही, पृ. 8/13
30 वही, 12/18
31 वही, पृ. 13/12
32 वही, पृ. 13/25
33 ज्ञान शब्दकोश, पृ. 382
34 श्रीसुभाषचरितम्, पृ. 11/33
पारे नदीनां क्षितिजस्य पारे पारे चशृर्धैस्य नगाधिपानाम्।
धरातलं यत्र सुरा ह्यपि स्वं स्वर्गं परित्यज्य समागताश्च।।
35 वही, पृ. 11/34
36 वही, पृ. 1/25
स्वराज्यस्य लब्धिः शरीरार्पणं वा विकल्पद्वयं सर्वथा चास्तु नूनम्।
य एवंविधाः साधकाः सन्ति देशे च एवं वृताः सुश्रिया लब्धकामाः।।
37 वही, पृ. 5/5
38 वही, पृ. 2/11
39 वही, पृ. 13/31